प्रारंभिक परीक्षा

इंडियन स्टार टोर्टोइज/कछुआ

संदर्भ

हाल ही में विभिन्न स्थानों से प्राप्त नमूनों के जीनोम अनुक्रमण के माध्यम से कछुओं की विविधता और प्राकृतिक वितरण को समझने के लिए एक अध्ययन किया गया था।

इंडियन स्टार टोर्टोइज के बारे में -

- **विशेषताएँ:**
  - इसका एक मध्यम आकार का सिर, झुकी हुई चोंच और छोटे मोटे पैर होते हैं जो विभिन्न आकारों और आकृतियों के ट्यूबरकल से ढके होते हैं।
  - नर की पूंछ लंबी होती है, जबकि मादा की पूंछ छोटी और ठूंठदार (stubby) होती है।
  - **यह एक दिनचर प्राणी है जो मुख्यतः सुबह और देर दोपहर में सक्रिय रहता है।**
  - **यह शाकाहारी है।**
- **आवास**: **यह भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका का स्थानिक है।** यह शुष्क, खुले आवासों जैसे झाड़ीदार जंगलों, घास के मैदानों आदि में रहता है।
- **संरक्षण स्थिति**:
  - **IUCN:** लुप्तप्राय
  - **WPA,1972:** अनुसूची I
  - **CITES:** परिशिष्ट I
- **खतरे**:
  - शहरीकरण और कृषि पद्धतियों के कारण आवास विखंडन

  - संकरण के कारण आनुवंशिक विविधता का नुकसान
  - **विदेशज पालतू जानवरों की बढ़ती मांग:**
    - वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो के अनुसार, 90% व्यापार अंतर्राष्ट्रीय पालतू बाजार में होता है।
  - **शैल पिरामिडिंग(Shell Pyramiding)**: कैद में पाले गए कछुओं में अक्सर पिरामिड के आकार के शैल विकसित हो जाते हैं (खराब पोषण के कारण), जिससे संभोग और प्रजनन प्रभावित होता है।
- **अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष**:
  - **इसने भारतीय स्टार कछुओं के 2 आनुवंशिक रूप से अलग समूहों की पहचान की:**
    1. **उत्तर-पश्चिमी समूह:** पाकिस्तान की सीमा से लगे शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है
    2. **दक्षिणी समूह**: प्रायद्वीपीय भारत में पाया जाता है।
  - अध्ययन से यह भी पता चला है कि उत्तर-पश्चिमी समूह आनुवंशिक रूप से स्थिर रहता है, जबकि दक्षिणी समूह में आनुवंशिक विविधता अधिक होती है।

स्रोत:

- **द हिंदू - अध्ययन ने भारतीय स्टार कछुए को साक्ष्य-आधारित संरक्षण के दायरे में ला दिया**

सथानूर बाँध

संदर्भ

चक्रवात फेंगल के कारण सथानुर बांध के ऊपरी इलाकों में पिछले 70 वर्षों में दर्ज की गई सबसे अधिक वर्षा हुई।

सथानूर बाँध के बारे में -

- **यह तमिलनाडु के प्रमुख बांधों में से एक है, जिसका निर्माण थेनपेन्नई नदी पर किया गया है, जिसे थंडरमपेट तालुक (तिरुवन्नामलाई जिला) में पेन्नैयार नदी भी कहा जाता है।**
- इसका **निर्माण 1958** में हुआ था।

पेन्नैयार नदी के बारे में -

- **पेन्नैयार नदी को थेनपन्नई के नाम से भी जाना जाता है।**
- **उद्गम**: नंदीदुर्ग पर्वत (चेन्नाकसेवा हिल्स), कर्नाटक की पूर्वी ढलान।
- यह **कर्नाटक और तमिलनाडु** से होकर बहती है।
- **नदी का 77% अपवाह बेसिन तमिलनाडु में है।**
- **सहायक नदियाँ**: मार्कंडानाधी, कम्बैनल्लूर, पम्बर, वणियार, कल्लार, वलयार आदि।
- पेन्नैयार नदी का **उल्लेख संगम साहित्य में** इसकी हरी-भरी वनस्पति के लिए किया गया है।
- **नदी पर महत्वपूर्ण मंदिर:** पेन्नेश्वर मंदिर, दक्षिण तिरूपति, वीराटेश्वर मंदिर।
- **मार्कंडेय नदी (पेन्नैयार नदी की प्रमुख सहायक नदी) पर कर्नाटक के बांध बनाने के इरादे को लेकर कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच पेन्नैयार नदी पर विवाद है।**

स्रोत:

- द हिन्दू - सथानूर बांध में क्या गलत हुआ?

आवश्यक सेवा रखरखाव अधिनियम

संदर्भ

उत्तर प्रदेश सरकार ने हाल ही में एक आदेश पारित कर अगले 6 महीने के लिए आवश्यक सेवा रखरखाव अधिनियम के तहत सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल पर प्रतिबंध लगा दिया है।

आवश्यक सेवा रखरखाव अधिनियम (ESMA) के बारे में -

- **ESMA को भारत की संसद द्वारा 1968 में अधिनियमित किया गया था।**
- इसका मुख्य उद्देश्य उन चीजों की सुचारू आवाजाही को बनाए रखना है जो आम नागरिकों के सामान्य जीवन के लिए आवश्यक हैं।
- **इसे अधिकतम 6 महीने के लिए लगाया जा सकता है, लेकिन केंद्र सरकार इसे 6 महीने से अधिक की अवधि के लिए बढ़ा सकती है, यदि वह संतुष्ट हो कि सार्वजनिक हित में ऐसा करना आवश्यक है।**
- राष्ट्रीय स्तर पर व्यवधान की स्थिति में, जैसे कि रेलवे पर, केंद्र सरकार द्वारा इसका प्रयोग किया जा सकता है।
- **राज्य सरकारों के पास भी अपना राज्य-विशिष्ट ESMA है,** जिसे वे केवल एक राज्य या राज्यों को प्रभावित करने वाली बाधाओं के मामले में लागू कर सकते हैं।
    - लागू करने से पहले सरकार को मीडिया या समाचार पत्र के माध्यम से कर्मचारियों को सचेत करना चाहिए।
- **ESMA के अंतर्गत आने वाली सेवाएँ:**
    - सार्वजनिक संरक्षण, स्वच्छता, जल आपूर्ति, अस्पताल और राष्ट्रीय रक्षा से संबंधित सेवाएँ।
    - पेट्रोलियम, कोयला, बिजली, इस्पात या उर्वरक के उत्पादन, वितरण या वितरण में शामिल कोई भी प्रतिष्ठान।
    - यह संचार और परिवहन सेवाओं तथा खाद्यान्नों के अधिग्रहण और वितरण से संबंधित किसी भी सरकारी पहल पर भी लागू होता है।

स्रोत:

- [द हिंदू - उत्तर प्रदेश में ESMA लागू करने का मतलब है सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन भड़क सकता है]

MuleHunter.AI

संदर्भ

भारतीय रिज़र्व बैंक ने ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी में शामिल म्यूल बैंक खातों की बढ़ती समस्या का समाधान करने के लिए एक नया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(AI) संचालित टूल MuleHunter.AI विकसित किया है।

MuleHunter.AI के बारे में -

- यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस/मशीन लर्निंग आधारित मॉडल है।
- **द्वारा विकसित:** रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब (RBIH)।
    - **RBIH भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है।**
    - इसकी स्थापना वित्तीय क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने वाले वातावरण को बढ़ावा देने और सुगम बनाने के लिए की गई थी।
- **लाभ:**
    - **म्यूल खातों की पहचान:**
        - यह म्यूल खातों की पहचान करने और उन पर नज़र रखने पर ध्यान केंद्रित करता है, जिनका उपयोग अक्सर धोखाधड़ी वाले लेनदेन को सुविधाजनक बनाने के लिए किया जाता है। MuleHunter लेनदेन पैटर्न का विश्लेषण करता है, और उन संदिग्ध खातों को चिह्नित करता है जिनका उपयोग अवैध रूप से प्राप्त धन को स्थानांतरित करने के लिए किया जा रहा है।
    - **वास्तविक समय की निगरानी:**
        - यह लेनदेन की वास्तविक समय पर निगरानी करने में सक्षम बनाता है, जिससे बैंकों और वित्तीय संस्थानों को संदिग्ध गतिविधियों का तुरंत पता लगाने और प्रतिक्रिया देने की अनुमति मिलती है।
    - **डेटा एनालिटिक्स:**
        - MuleHunter बड़ी मात्रा में लेनदेन डेटा का आकलन करने के लिए उन्नत डेटा एनालिटिक्स और मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करता है। इससे धोखाधड़ी वाली गतिविधियों से जुड़े रुझानों और पैटर्न को पहचानने में मदद मिलती है, जिससे संभावित घोटालों को पहले से ही बंद करना आसान हो जाता है।
    - **विभिन्न संस्थानों के बीच सहयोग:**
        - यह बैंकों, भुगतान सेवा प्रदाताओं और कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करता है और डिजिटल धोखाधड़ी के खिलाफ एक मजबूत बचाव बनाने में मदद करता है।

म्यूल बैंक खाता(mule bank account) क्या है?

- **म्यूल खाते वे बैंक खाते हैं जिनका दुरुपयोग अपराधियों द्वारा अवैध गतिविधियों, जैसे अवैध धन शोधन, के लिए किया जाता है।**
- खाते व्यक्तियों से खरीदे जाते हैं, अक्सर **निम्न आय वर्ग** या **कम तकनीकी साक्षरता वाले लोगों से**।
- शब्द "मनी म्यूल" का तात्पर्य ऐसे निर्दोष खाताधारकों से है जिनका ऐसी गतिविधियों के लिए शोषण किया जाता है।
- जब ऐसी घटनाएं रिपोर्ट की जाती हैं, तो धन का लेन-देन करने वाले लोग पुलिस जांच का लक्ष्य बन जाते हैं, क्योंकि इसमें उनके खाते ही शामिल होते हैं, जबकि वास्तविक अपराधी पकड़ में नहीं आते।

स्रोत:

- इंडियन एक्सप्रेस - आरबीआई ने म्यूल बैंक खातों पर नकेल कसने के लिए एआई का लाभ उठाया

एंटी ड्रोन इकाइयाँ

संदर्भ

केंद्रीय गृह मंत्री और मंत्री ने घोषणा की है कि भारत जल्द ही ड्रोन से संबंधित खतरों से देश की रक्षा के लिए एक व्यापक एंटी-ड्रोन इकाई स्थापित करेगा।

एंटी-ड्रोन तकनीक का विकास - लेजर से सुसज्जित एंटी-ड्रोन गन माउंट सिस्टम

- **इसे सीमा बलों, रक्षा मंत्रालय, डीआरडीओ और अनुसंधान विभागों को शामिल करते हुए "संपूर्ण सरकारी दृष्टिकोण" के माध्यम से विकसित किया गया है।**
- इसके परिणामस्वरूप पंजाब अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर ड्रोन घुसपैठ में 55% अवरोधन हुआ है, जो पहले के 3% से उल्लेखनीय सुधार है।
- **ड्रोन विरोधी या एंटी-ड्रोन उपायों की आवश्यकता:**
    - ड्रोन आधारित घुसपैठ का खतरा बढ़ता जा रहा है और भविष्य में इससे और भी बड़ी चुनौतियां उत्पन्न होने की आशंका है।
    - ड्रोन का उपयोग सीमा पार हथियारों, नशीले पदार्थों और नकली मुद्रा की तस्करी के लिए किया जा रहा है।

ड्रोनम (Dronaam)

- ड्रोनम काउंटर-ड्रोन प्रणाली की तैनाती से भारत की रक्षा क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- **इसे भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) ने गुरुत्व सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से विकसित किया है।**
- यह प्रणाली, विशेष रूप से भारत की सीमाओं पर, बढ़ते खतरे का कारण बन चुके, खतरनाक ड्रोनों का पता लगाने, उन पर नज़र रखने और उन्हें निष्क्रिय करने के लिए डिज़ाइन की गई है।

द्रोणाम की मुख्य विशेषताएं:

- **पता लगाना:** रडार से लैस जो कई किलोमीटर दूर से ड्रोन की पहचान कर सकता है।
- **ट्रैकिंग:** ड्रोन गतिविधि की वास्तविक समय निगरानी के लिए इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल और इन्फ्रारेड सेंसर का उपयोग करता है।
- **न्यूट्रलाइजेशन:** ड्रोन के संचार और जीपीएस को बाधित करने के लिए आरएफ (रेडियो फ्रीक्वेंसी) जैमर का उपयोग किया जाता है, जिससे वे प्रभावी रूप से गैर-संचालनशील हो जाते हैं।

स्रोत:

- [इंडियन एक्सप्रेस - भारत सुरक्षित सीमा के लिए एंटी ड्रोन इकाई बनाएगा:]

तेल क्षेत्र संशोधन विधेयक, 2024

संदर्भ

हाल ही में राज्यसभा ने तेल क्षेत्र (विनियमन और विकास) संशोधन विधेयक, 2024 को ध्वनिमत से पारित कर दिया।

तेल क्षेत्र संशोधन विधेयक, 2024 के बारे में -

- यह तेल क्षेत्र विधेयक, **तेल क्षेत्र (विनियमन और विकास) अधिनियम, 1948 में संशोधन करता है,** जो मूलतः तेल और खनिज दोनों प्रकार के परिचालनों को नियंत्रित करता था।
- **संशोधन का उद्देश्य खनन गतिविधियों से पेट्रोलियम के विनियमन को अलग करना, घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना और आयात पर निर्भरता को कम करना है।**

प्रमुख संशोधन

- **खनिज तेल की विस्तृत परिभाषा:**
  - वर्तमान अधिनियम में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस ही दो ऐसे पदार्थ हैं जिन्हें खनिज तेल के रूप में परिभाषित किया गया है।
  - संशोधन में परिभाषा का विस्तार करते हुए इसमें प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले **हाइड्रोकार्बन, कोल बेड मीथेन और शेल गैस/तेल को भी शामिल किया गया है।**
  - इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि इस परिभाषा में "पेट्रोलियम या कोयला या शेल के साथ पाए जाने वाले कोयला, लिग्नाइट और हीलियम" शामिल नहीं होंगे।
- **पेट्रोलियम पट्टे का परिचय:**
  - विधेयक में "खनन पट्टों" के स्थान पर "पेट्रोलियम पट्टों" की शुरुआत की गई है। इन पट्टों में खनिज तेलों की खोज, अन्वेषण, विकास, उत्पादन और निपटान जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।
- **केंद्र की नियामक शक्तियों का विस्तार:**
  - यह अधिनियम केंद्र को पट्टे प्रदान करने, पट्टे की शर्तों और नियमों का निर्धारण करने, खनिज तेलों के संरक्षण और विकास, तेल उत्पादन के तरीकों आदि जैसे मामलों पर नियम बनाने की शक्ति देता है।
  - यह विधेयक केंद्र सरकार को ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, तेल उत्पादन और प्रसंस्करण इकाइयों को साझा करने, पट्टों के विलय और पट्टों पर विवादों को सुलझाने के लिए पट्टों के नियम बनाने की अनुमति देकर उसकी शक्तियों का और विस्तार करता है।

चिंताएं

- **राज्य के अधिकारों पर प्रभाव:** विपक्षी दल तर्क दे रहे हैं कि अधिनियम का ध्यान खनन पट्टों से हटाकर पेट्रोलियम पट्टों पर केन्द्रित करने से पेट्रोलियम गतिविधियों पर कर लगाने और रॉयल्टी वसूलने की राज्य की शक्तियां कम हो सकती हैं।
- **पर्यावरणीय जोखिम:** निजी क्षेत्र की भागीदारी पर जोर देने से पर्यावरणीय सुरक्षा और कम होती जवाबदेही के बारे में प्रश्न उठते हैं।

स्रोत:

- इंडियन एक्सप्रेस - नया तेल क्षेत्र विधेयक

सीरियाई संघर्ष का नया चरण

संदर्भ

सीरियाई विद्रोहियों ने राष्ट्रपति बशर अल-असद के 24 साल पुराने शासन को तेजी से उखाड़ फेंका, जिससे 59 वर्षीय नेता को मास्को भागने पर मजबूर होना पड़ा, जहां उन्हें शरण दी गई।

वर्तमान आक्रमण में प्रमुख विद्रोही समूह और कर्ता

सीरियाई युद्ध

- **यह संघर्ष 2011 में अरब स्प्रिंग के दौरान राष्ट्रपति बशर अल-असद के शासन के विरुद्ध विरोध प्रदर्शनों के साथ शुरू हुआ था।**
- समय के साथ, यह युद्ध एक बहुआयामी संघर्ष में बदल गया जिसमें घरेलू विपक्षी समूह, विदेशी शक्तियां और चरमपंथी संगठन शामिल हो गए।
- **अन्य कारण:**
    - **सत्तावादी शासन:** असद परिवार के अधीन दशकों के दमनकारी शासन ने जनता में व्यापक आक्रोश पैदा कर दिया।
    - **आर्थिक कठिनाई:** उच्च बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और आर्थिक असमानता ने जनता में असंतोष को बढ़ावा दिया।
    - **सांप्रदायिक विभाजन:** सीरिया के सुन्नी बहुमत ने अलावाइट अल्पसंख्यक के प्रभुत्व पर नाराजगी जताई, जिससे असद संबंधित हैं।
    - **आंतरिक विखंडन:** संघर्ष कई गुटों में विभाजित हो गया, जिसमें असद शासन, विपक्षी समूह, कुर्द बल और ISIS जैसे चरमपंथी संगठन शामिल थे।

- **हयात तहरीर अल-शाम (HTS):**
    - **उत्पत्ति:** इसकी शुरुआत सीरिया में अल-कायदा की शाखा जबात अल-नुसरा के रूप में हुई, बाद में 2016 में इसका नाम बदलकर जबात फतेह अल-शाम कर दिया गया और 2017 में एचटीएस के रूप में विकसित हुआ।
    - **नेतृत्व:** अबू मोहम्मद अल-जोलानी द्वारा नेतृत्व।
    - एचटीएस को अमेरिका, रूस और तुर्की द्वारा आतंकवादी समूह घोषित किया गया है।
- **सीरियन डेमोक्रेटिक फोर्सेस (SDF):**
    - **संरचना:** कुर्द मिलिशिया।
    - **नियंत्रणाधीन क्षेत्र:** पूर्वोत्तर सीरिया का स्वायत्त प्रशासन करता है।
    - **पूर्व अमेरिकी समर्थन:** अमेरिकी सेना की अचानक वापसी से पहले ट्रम्प प्रशासन के दौरान भारी समर्थन प्राप्त था।
- **सीरियाई राष्ट्रीय सेना (SNA):**
    - **उत्पत्ति:** 2011 में फ्री सीरियन आर्मी से उभरे।
    - तुर्की द्वारा समर्थित तथा असद और SDF दोनों का विरोध करता है।
    - **भूमिका:** 2019 में स्थापित "सैन्य संचालन कमान" के तहत एचटीएस के साथ संयुक्त रूप से संचालन करना।
- **असद शासन:** रूस, ईरान और हिजबुल्लाह के समर्थन से सीरिया के अधिकांश भाग पर नियंत्रण रखता है।
- **तुर्की:** ऐतिहासिक रूप से सीरियाई विद्रोहियों का समर्थन करता है और इदलिब में व्यापार और पहुँच को नियंत्रित करता है। **इसने 2016 से उत्तरी सीरिया को नियंत्रित किया हुआ है।**

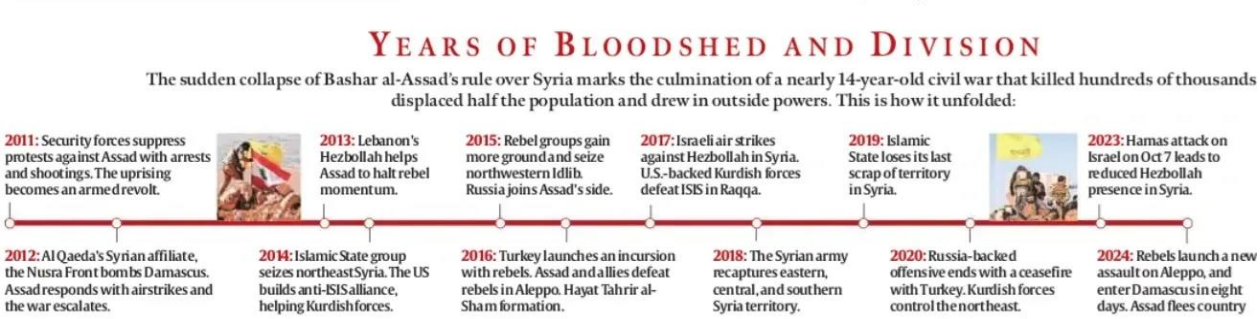

सीरिया के महत्वपूर्ण स्थान -

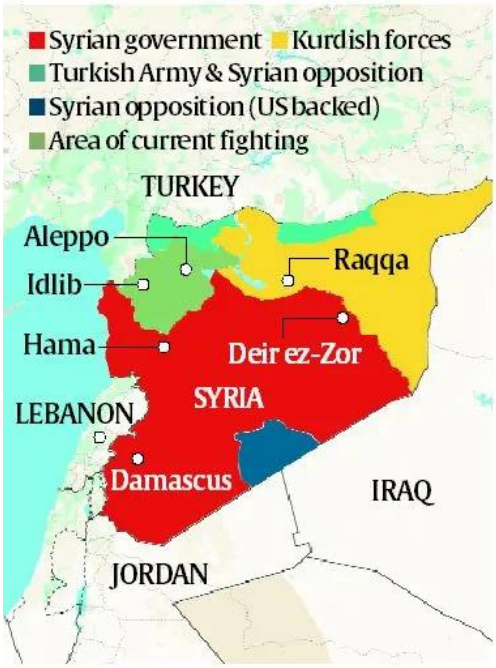

स्रोत:

- [इंडियन एक्सप्रेस - सीरिया में विद्रोही आक्रमण: अब क्या हो रहा है और क्यों?]

संपादकीय सारांश

आर्थिक वृद्धि बनाम उत्सर्जन: भारत

संदर्भ

भारत के आर्थिक सर्वेक्षण (2023-24) के अनुसार, देश ने अपनी आर्थिक वृद्धि को ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन से डीकपल कर लिया है।

डीकपलिंग (Decoupling) क्या है?

- **यह आर्थिक वृद्धि और पर्यावरणीय गिरावट के बीच संबंध को संदर्भित करता है।**
- **डीकपलिंग के प्रकार**:
    - **पूर्ण/निरपेक्ष डीकपलिंग:**
        - उत्सर्जन में कमी होने पर आर्थिक वृद्धि होती है।
        - यह आदर्श परिदृश्य है, पर्यावरणीय नुकसान बढ़ाए बिना वृद्धि हासिल करना।
    - **सापेक्ष डीकपलिंग:**
        - जीडीपी और उत्सर्जन दोनों बढ़ते हैं, लेकिन जीडीपी अधिक तेज़ गति से बढ़ती है।
        - यह प्रगति को दर्शाता है लेकिन यह स्वीकार करता है कि उत्सर्जन में वृद्धि जारी है।
- **डीकपलिंग का महत्व:** यह राष्ट्रों को जलवायु परिवर्तन को बदतर किए बिना जीवन स्तर को बढ़ाने और ऊर्जा गरीबी को कम करने की अनुमति देता है।
- ऐतिहासिक रूप से, आर्थिक वृद्धि को अक्सर पर्यावरणीय क्षरण में वृद्धि से जोड़ा गया है।
- इस वृद्धि को ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में देखा जाता है।
- हाल के दिनों में, आर्थिक वृद्धि को बनाए रखते हुए उत्सर्जन को कम करने की तत्काल आवश्यकता एक वैश्विक प्राथमिकता बन गई है।

क्या भारत ने वास्तव में अपनी आर्थिक वृद्धि को ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन से पृथक कर लिया है?

- **आर्थिक सर्वेक्षण (2023-24):**
    - सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर: **7% CAGR**
    - ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन वृद्धि दर: **4% CAGR**
    - यद्यपि, सर्वेक्षण यह निर्दिष्ट नहीं करता है कि, यह पूर्ण या सापेक्ष वियोजन का प्रतिनिधित्व करता है अथवा नहीं।
- **वियोजन (Decoupling) का विश्लेषण (क्षेत्र-वार और अर्थव्यवस्था-व्यापी):**
    - **OECD (2002)** से वियोजन संकेतकों का उपयोग करते हुए, भारत में वियोजन की स्थिति की जांच की गई:
        - **1990** के दशक (व्यापार उदारीकरण के बाद) से, भारत ने स्थिर आर्थिक विकास का अनुभव किया है।
        - **अर्थव्यवस्था-व्यापी वियोजन:**
            - **1990** से सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि: छह गुना वृद्धि
            - **1990** से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन वृद्धि: तीन गुना वृद्धि
            - यह सापेक्ष वियोजन को इंगित करता है।
        - **क्षेत्रवार वियोजन:**
            - ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में प्रमुख योगदानकर्ता, कृषि और विनिर्माण क्षेत्र हैं।
            - इन क्षेत्रों में वियोजन का आकलन सकल मूल्य वर्धित (**GVA**) की वृद्धि की तुलना, उत्सर्जन की वृद्धि से करके किया जाता है।

चुनौतियाँ और भविष्य के लक्ष्य

- भारत ने अभी तक अपने उत्सर्जन को चरम पर नहीं पहुँचाया है, इसलिए आर्थिक विकास के साथ उत्सर्जन में वृद्धि होने की उम्मीद है।
- पूर्ण वियोजन प्राप्त करना एक दीर्घकालिक चुनौती है, किन्तु जलवायु प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है।
- **आवश्यक प्रयास:** बढ़ावा देने वाली नीतियां:
    - नवीकरणीय ऊर्जा
    - उत्सर्जन शमन
    - सतत विकास

स्रोत: द हिंदू: भारत की आर्थिक वृद्धि बनाम उत्सर्जन का मुद्दा

निबंध: विषमतापूर्ण समाज में दान का स्थान

परिचय

तीव्रता से असमान होते विश्व में, दान की भूमिका और प्रभावशीलता गंभीर जांच के विषय हैं। जरूरतमंदों को धन देने का कार्य निस्संदेह सराहनीय है, किन्तु यह उन संरचनाओं के संदर्भ में बुनियादी प्रश्न भी उठाता है, जो असमानता उत्पन्न करते हैं और उसे बनाए रखते हैं। परोपकार, तात्कालिक कष्टों को कम करने के साथ-साथ, सदैव गरीबी और धन की सघनता के प्रणालीगत कारणों को संबोधित नहीं करता है। जैसा कि थॉमस पिकेटी का तर्क है, सच्चा समाधान निजी दान में नहीं, बल्कि नीति-संचालित पुनर्वितरण और अवसरों की समानता में निहित है।

दान का विरोधाभास

वॉरेन बफेट जैसे अरबपतियों ने अपनी अधिकांश संपत्ति, धर्मार्थ कार्यों के लिए दान करने का संकल्प लिया है। बफ़ेट द्वारा हाल ही में अपने बच्चों द्वारा प्रबंधित फाउंडेशनों को $870 मिलियन का हस्तांतरण, जिसमें 52 बिलियन डॉलर का आजीवन दान शामिल है, परोपकार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उनका मानना है कि, धन का उपयोग उन कम भाग्यशाली लोगों के लिए "अवसरों की समानता" के लिए किया जाना चाहिए। उनके अपने शब्दों में, "जिस भाग्य ने कुछ व्यक्तियों का साथ दिया और उन्हें अमीर बनने में सहायता की, उसे मृत्यु के बाद कम भाग्यशाली लोगों की सहायता के लिए विस्तारित किया जाना चाहिए।" यद्यपि यह परिप्रेक्ष्य नेक प्रयोजनों को दर्शाता है, किन्तु यह एक बुनियादी विरोधाभास को भी प्रकट करता है: वही प्रणालियाँ जो अरबपतियों का निर्माण करती हैं तथा दान की आवश्यकता वाली स्थितियाँ भी उत्पन्न करती हैं। "असमानता भाग्य का प्रश्न नहीं है, बल्कि समाज द्वारा निर्धारित विशिष्ट नीति संस्थानों का प्रश्न है।" इतने व्यापक पैमाने पर धन का संचय केवल व्यक्तिगत प्रयास या परिश्रम के कारण नहीं होता है, बल्कि प्रायः अविनियमन, एकाधिकार और नीति विकल्पों के परिणामस्वरूप होता है, जो कई लोगों की अपेक्षा कुछ का पक्ष लेते हैं।

भाग्य समतावाद और प्रणालीगत असमानता

बफेट का दर्शन "भाग्य समतावाद" की अवधारणा से सुमेलित होता है, जो यह मानता है कि किसी भी व्यक्ति को अपने नियंत्रण से परे परिस्थितियों के कारण कष्ट नहीं उठाना चाहिए। जैसा कि ब्रैंको मिलानोविच ने कहा है कि, व्यक्ति का जन्म स्थान उसकी धन-संपत्ति की संभावना पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। बफ़ेट स्वीकार करते हैं कि, एक समृद्ध देश में श्वेत पुरुष के रूप में जन्म लेने से उनका भाग्य प्रभावित हुआ। दान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता "यह सुनिश्चित करने के प्रयास को दर्शाती है कि, उनके धन का उपयोग उन कम भाग्यशाली लोगों के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है।"

यद्यपि, दान कारणों के स्थान पर लक्षणों को संबोधित करता है। बिल गेट्स और जेफ बेजोस जैसे अरबपतियों का उदय एकाधिकार प्रथाओं और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करने के लिए, नीतियों की विफलता का परिणाम हो सकता है। उनकी अपार संपत्ति केवल भाग्य का परिणाम नहीं है, बल्कि उन प्रणालियों का परिणाम है, जो श्रमिकों की तुलना में कॉर्पोरेट दिग्गजों का पक्ष लेती हैं, जिससे वेतन स्थिर रहता है और कार्य करने की स्थिति खराब होती है। यह विसंगति यह प्रश्न उठाती है: क्या दान धन संकेंद्रण से होने वाली हानि को कम करता है, या यह केवल इसके प्रभाव को कम करता है?

दान बनाम न्याय

न्याय और दान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, किन्तु वे विभिन्न तरीके से संचालित होते हैं। दान धनी लोगों के विवेक पर निर्भर करता है, जबकि न्याय के लिए प्रणालीगत निष्पक्षता की आवश्यकता होती है। दार्शनिक सेंट ऑगस्टाइन ने ठीक ही कहा था, "दान रोके गए न्याय का विकल्प नहीं है।" यद्यपि दान अस्थायी राहत प्रदान कर सकता है, किन्तु यह असमानता को कम करने के लिए संरचनात्मक परिवर्तन सुनिश्चित नहीं करता है। वॉरेन बफ़ेट स्वयं पीढ़ियों के बीच धन संचय की सीमा को स्वीकार करते हैं, और कहते हैं कि, धन के ऐसे संकेंद्रण की अनुमति देना "समाज के लिए एक समस्या है।"

दूसरी ओर, न्याय का उद्देश्य नीतिगत हस्तक्षेपों के माध्यम से समान अवसर उपलब्ध कराना है। जैसा कि पिकेटी का तर्क है, एक निष्पक्ष समाज को अवसरों को समान बनाने के लिए "राज्य द्वारा समर्थित कराधान और पुनर्वितरण" की आवश्यकता होती है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि, समाज कुछ व्यक्तियों की उदारता पर निर्भर न रहे, बल्कि एक ऐसी प्रणाली का निर्माण करे, जहां धन अधिक समान रूप से वितरित हो।

नीतिगत विकल्प और उनके परिणाम

1980 के दशक के बाद से धन असमानता के विस्फोट को, रोनाल्ड रीगन और मार्गरिट थैचर जैसे नेताओं द्वारा प्रचारित नव-उदारवादी नीतियों, अविनियमन और 'ट्रिकल-डाउन' अर्थशास्त्र से संबद्ध किया जा सकता है। भारत में, आर्थिक उदारीकरण ने तीव्र विकास को बढ़ावा दिया, किन्तु साथ ही "असमानता में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई और अवसरों का वितरण विषम हो गया।" इन नीतियों ने एक ऐसे विश्व में योगदान दिया है, जहां कुछ सबसे अमीर लोगों के पास जनसंख्या के निचले आधे हिस्से के समान संपत्ति है।

दान, सहायक होते हुए भी, इन प्रणालीगत मुद्दों का समाधान नहीं करता है। इसके स्थान पर, समाजों को ऐसी नीतियों की आवश्यकता है, जो निम्न को प्रोत्साहित करें:

- उच्च न्यूनतम मजदूरी
- प्रगतिशील कराधान
- एकाधिकार को रोकने के लिए एंटीट्रस्ट विनियम
- श्रम अधिकारों और संघों को सुदृढ़ बनाना

ऐसे उपाय यह सुनिश्चित करते हैं कि, धन का सृजन कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित होने के स्था पर समाज के व्यापक वर्ग को लाभ पहुंचाए।

प्रणालीगत सुधार की आवश्यकता

असमानता को दूर करने के लिए अरबपतियों के परोपकार पर निर्भर रहना, एक नाजुक समाधान है। सच्ची प्रगति के लिए दान से आगे बढ़ने और न्याय-संचालित सुधारों के माध्यम से असमानता के मूल कारणों को संबोधित करने की आवश्यकता है। वॉरेन बफ़ेट के शब्द एक विचारशील अनुस्मारक प्रदान करते हैं: "यद्यपि किसी के जीवनकाल के दौरान धन संचय करना और एकत्र करना गलत नहीं है, किन्तु इसे पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ने देना समाज के लिए एक समस्या है।" समाजों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अवसर समान हों और धन संचय होने के बाद न केवल पुनर्वितरित किया जाए, बल्कि प्रारंभ से ही निष्पक्ष रूप से उत्पन्न और साझा किया जाए।

निष्कर्ष

एक असमान समाज में, दान तात्कालिक कष्टों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, किन्तु यह प्रणालीगत न्याय का विकल्प नहीं है। न्याय निष्पक्षता को सुनिश्चित करता है, जबकि दान अन्याय द्वारा छोड़े गए अंतराल की पूर्ति करता है। चूंकि समाज सतत विकास और समान अवसरों के लिए प्रयास करते हैं, इसलिए ऐसी नीतियां निर्मित करनें पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, जो धन के संचय को रोकें और साझा समृद्धि को बढ़ावा दें। तभी हम एक ऐसा समाज प्राप्त कर सकते हैं, जहाँ दान की आवश्यकता कम हो क्योंकि वहाँ न्याय अधिक दिया जाता है।

स्रोत: द हिंदू: असमान समाज में दान का स्थान

आरबीआई डॉलर पर निर्भरता से बचाव चाहता है, लेकिन डी-डॉलराजेशन पर जोर नहीं देना चाहता

संदर्भ

- भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर ने कहा कि भारत "डी-डॉलराइजेशन" नहीं कर रहा है, और घरेलू मुद्राओं में लेनदेन को बढ़ावा देने वाले हालिया उपायों का उद्देश्य भारतीय व्यापार को जोखिम से मुक्त करना है।
- यह स्पष्टीकरण अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने की मांग करने पर ब्रिक्स देशों के खिलाफ "100 प्रतिशत प्रशुल्क" की धमकी देने के कुछ दिनों बाद आया है।

समाचार के बारें में और अधिक जानकारी

- वोस्ट्रो खातों को अनुमति देने और स्थानीय मुद्रा व्यापार समझौतों में प्रवेश करने जैसे आरबीआई के फैसले का उद्देश्य डॉलर पर निर्भरता को कम करने के बजाय जोखिम में विविधता लाना है।
- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) अधिक सोना खरीद रहा है और अपने सोने के भंडार को विदेशों से भारत वापस ला रहा है।
    - यह कदम आंशिक रूप से बढ़ती वैश्विक अनिश्चितताओं के कारण है, खासकर यूक्रेन युद्ध के बाद, और द्वितीयक प्रतिबंधों का सामना करने की आशंकाओं की प्रतिक्रिया भी है।

- **वोस्ट्रो खाता**: वोस्ट्रो खाता एक विदेशी बैंक द्वारा घरेलू बैंक की मुद्रा में घरेलू बैंक के साथ रखा गया एक खाता है।
  ○ उदाहरण के लिए, किसी भारतीय बैंक में रुपये में अंकित खाता रखने वाला रूसी बैंक वोस्ट्रो खाता होगा। यह अमेरिकी डॉलर पर निर्भर रहने के बजाय **स्थानीय मुद्राओं** (जैसे, रुपये और रूबल) में व्यापार भुगतान की अनुमति देता है।
- **स्थानीय मुद्रा व्यापार समझौते**: ये समझौते दो देशों को डॉलर को मध्यस्थ के रूप में उपयोग करने के बजाय अपनी मुद्राओं का उपयोग करके व्यापार करने की अनुमति देते हैं।
  ○ उदाहरण के लिए, यदि भारत संयुक्त अरब अमीरात के साथ व्यापार समझौता करता है, तो लेनदेन सीधे **रुपये और दिरहम** में तय किया जा सकता है।

भारत डी-डॉलराइजेशन का समर्थन क्यों नहीं कर रहा है?

- अमेरिकी डॉलर के विकल्प के रूप में चीनी युआन का बढ़ता उपयोग।
  ○ भारत ने रूसी तेल खरीदने के लिए युआन का उपयोग नहीं करने का फैसला किया है, भले ही रूस पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण युआन को तेजी से स्वीकार कर रहा है।
- भारत अमेरिकी डॉलर पर अत्यधिक निर्भर होने को लेकर चिंतित है, जिससे वह एहतियाती कदम उठा रहा है।

तथ्य

- पश्चिम द्वारा $300 बिलियन का रूसी विदेशी भंडार फ्रीज करने के बाद, युआन पिछले साल रूस में सबसे अधिक कारोबार वाली मुद्रा बन गई।

सोने की खरीद में वैश्विक रुझान

- **केंद्रीय बैंकों द्वारा रिकॉर्ड खरीदारी**: केंद्रीय बैंकों ने **2022** में **1,136** टन सोना (रिकॉर्ड पर उच्चतम वार्षिक मांग) और **2023** में **1,037** टन सोना खरीदा।
    - **वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल** ने अक्टूबर **2024** में **60** टन शुद्ध सोने की खरीद की सूचना दी:
        - आरबीआई ने **27** टन ख़रीदा।
        - तुर्की और पोलैंड ने क्रमशः **17** टन और **8** टन ख़रीदा।
- **सोने की खरीद में चीन का नेतृत्व**: पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना पिछले दो वर्षों में सोने का सबसे बड़ा खरीदार रहा है।
    - चीन की सोने की खरीद, प्रतिबंध से प्रभावित रूस का समर्थन करती है और अमेरिका के साथ उसके व्यापार युद्ध के अनुरूप है।
- **सोने को रखने के प्रभाव में वृद्धि**: केंद्रीय बैंक अमेरिकी डॉलर भंडार की आवश्यकता को कम करते हैं, विकास परियोजनाओं के लिए पूंजी मुक्त करते हैं।
    - आईएमएफ का **COFER** डेटा वैश्विक भंडार में डॉलर की हिस्सेदारी में धीरे-धीरे गिरावट दर्शाता है, युआन में बढ़त, डॉलर की गिरावट का एक चौथाई हिस्सा है।

भारत के पड़ोस में डॉलर के प्रभुत्व की चुनौतियाँ

- **क्षेत्रीय आर्थिक तनाव**: **श्रीलंका**, **बांग्लादेश**, **नेपाल और पाकिस्तान जैसे** देशों में यूक्रेन युद्ध के बाद डॉलर भंडार में भारी गिरावट आई, जिससे व्यापार में व्यवधान और सामाजिक अशांति पैदा हुई।
- **भारत की डॉलर संबंधी चिंताएँ**: तेल की बढ़ती कीमतों और डॉलर के उच्च मूल्य ने भारत के लिए लागत बढ़ा दी है।
    - हालांकि भारत के पास मजबूत डॉलर भंडार है, इसका लक्ष्य घरेलू मुद्रा व्यापार के माध्यम से निर्भरता कम करना है।

घरेलू मुद्रा व्यापार के लिए भारत का दबाव

विभिन्न पहलें:

- **घरेलू मुद्राओं में व्यापार**: भारत अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने के लिए रूस और संयुक्त अरब अमीरात के साथ स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को प्रोत्साहित कर रहा है।
- **रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण**: यदि तेल निर्यातक रुपये से भुगतान स्वीकार करना शुरू कर दें तो इसे संभावित बढ़ावा मिल सकता है।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस:आरबीआई डॉलर पर निर्भरता से बचाव चाहता है, लेकिन डी-डॉलराजेशन पर जोर नहीं देना चाहता

विश्व मृदा दिवस: भारत का मृदा स्वास्थ्य

संदर्भ

- **5 दिसंबर, 2024 को 10वां विश्व मृदा दिवस मनाया गया, जिसका विषय था "मिट्टी की देखभाल – मापना, निगरानी करना और प्रबंधित करना।"**
- यह विषय स्वस्थ मृदा के महत्वपूर्ण महत्व पर जोर देता है, जिसके लिए प्रकृति को मात्र 2-3 सेमी ऊपरी मृदा तैयार करने में लगभग 1,000 वर्ष लगते हैं।

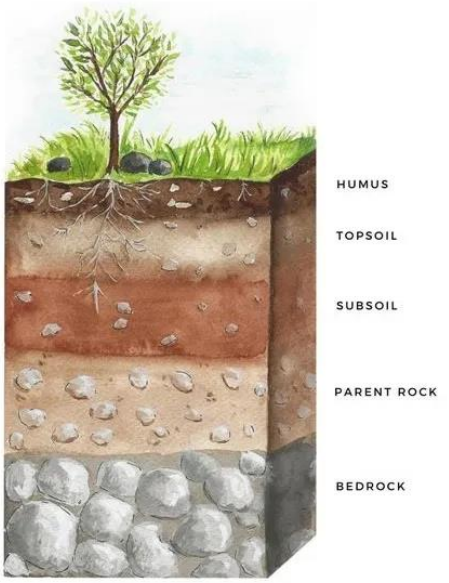

- उपरी मृदा (टॉपसॉइल) मिट्टी की सबसे ऊपरी परत है, जो पौधों की वृद्धि और पारिस्थितिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।
- यह आमतौर पर 2 से 10 इंच (5 से 25 सेमी) की गहराई तक फैली होती है और इसमें कार्बनिक पदार्थ, पोषक तत्वों और सूक्ष्मजीवों की उच्च सांद्रता होती है।
- 95% भोजन ऊपरी मृदा से उत्पादित होता है।

भारतीय मिट्टी की स्थिति

- 5% से कम मिट्टी में नाइट्रोजन (N) पर्याप्त है।
- **40%** मृदाओं में फॉस्फेट (P) तथा **32%** में पोटाश (K) पर्याप्त मात्रा में होता है।
- केवल **20%** मिट्टी में पर्याप्त मात्रा में कार्बनिक कार्बन मौजूद है।
- मिट्टी में **सूक्ष्म पोषक तत्वों** (सल्फर, आयरन, जिंक, बोरोन) की कमी है, जो मध्यम से लेकर गंभीर तक है।

तथ्य

- भारत कृषि उपज का शुद्ध निर्यातक बन गया है।
- 2020-21 से 2022-23 तक, भारत ने लगभग 85 मिलियन टन अनाज का निर्यात किया, जबकि कोविड-19 महामारी के दौरान 813 मिलियन से अधिक लोगों को मुफ्त अनाज उपलब्ध कराया।
- भारत वर्तमान में विश्व स्तर पर चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है, जिसकी सफलता का श्रेय आंशिक रूप से उर्वरक उद्योग द्वारा आवश्यक पोषक तत्वों का समय पर वितरण सुनिश्चित करने के प्रयासों को जाता है।

मृदा, उर्वरक उद्योग और कृषि में चुनौतियाँ -

- ऐसा बताया गया है कि पोषक तत्वों के प्रयोग में कम से कम 30% की कमी है, तथा कुछ क्षेत्रों में तो 50% तक की अकुशलता देखी गई है।
- उर्वरक सब्सिडी की राशि 1.88 लाख करोड़ रुपये थी, जो पिछले वित्तीय वर्ष के केन्द्रीय बजट का लगभग 4% थी।
- यूरिया की कीमतें सरकार द्वारा भारी सब्सिडी पर नियंत्रित की जाती हैं, जो लगभग 70 डॉलर प्रति टन है, जिससे यह विश्व स्तर पर सबसे सस्ती है।
- वर्तमान सब्सिडी नीति के कारण पोषक तत्वों के उपयोग में असंतुलन पैदा हो गया है:
    - पंजाब में किसान अनुशंसित मात्रा से 61% अधिक नाइट्रोजन का उपयोग करते हैं, लेकिन 89% कम पोटाश और 8% कम फॉस्फेट का प्रयोग करते हैं।
    - तेलंगाना और अन्य राज्यों में भी इसी तरह के पैटर्न देखे गए हैं।
- इस असंतुलन के परिणामस्वरूप नाइट्रोजन का उपयोग अधिक होता है, जिससे हरियाली तो बढ़ती है, लेकिन फास्फोरस और पोटेशियम की कमी के कारण अनाज की पैदावार में वृद्धि नहीं होती।

उर्वरक क्षेत्र में प्रस्तावित सुधार

- **विनियमन और प्रत्यक्ष आय हस्तांतरण**: सीमेंट और डीजल उद्योगों की तरह नवाचार और दक्षता को बढ़ावा देने के लिए उर्वरक की कीमतों को विनियमन मुक्त किया जाना चाहिए।
    - किसानों को उर्वरक खरीदने के लिए **डिजिटल कूपन** उपलब्ध कराये जायेंगे।
- **संतुलित उर्वरक उपयोग**: उर्वरक उपयोग को सिफारिशों (एन, पी, के संतुलन) के साथ संरेखित करना।
    - इष्टतम उत्पादकता और किसान लाभप्रदता के लिए **सूक्ष्म पोषक तत्व अनुप्रयोग को** बढ़ावा देना।
- **सुधार की तैयारी**: उर्वरक बिक्री, मृदा स्वास्थ्य कार्ड (एसएचसी), पीएम-किसान, भूमि रिकॉर्ड, उगाई गई फसलें, बैंक खाते और मोबाइल नंबरों से डेटा को त्रिकोणीय बनाना।
    - किसानों को लाभों के बारे में बताएं, यह सुनिश्चित करें कि वे समझें कि सुधारों से लाभ, मृदा स्वास्थ्य और राष्ट्रीय कृषि स्थिरता में वृद्धि होगी।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस: मिट्टी के साथ सब कुछ ठीक नहीं है]